M.A. Pre-
III Paper

Sem - I - CC-3

मूलसूत्र साहित्य पर प्रकाश डालें। 3.

मूलसूत्रों में साधु जीवन के मूलभूत नियमों का विवेचन पाया जाता है। मूलसूत्र चार हैं-

① उत्तराध्ययन सूत्र → यह एक धार्मिक काव्य ग्रंथ है। भगवान महावीर ने अपने जीवन के उत्तरकाल में निर्वाण से पूर्व जो उपदेश दिये थे, उन्हीं का इस ग्रंथ में किया गया है। उत्तराध्ययन शब्द के अर्थ पर विचार करने के लिये इस शब्द की व्युत्पत्ति को समझ लेना आवश्यक है। यह शब्द उत्तर अध्ययन इन दो शब्दों के योग से बना है। उत्तर शब्द के दो अर्थ हैं- प्रधान और पश्चात्वर्ती। प्रथम अर्थ के अनुसार धर्म सम्बन्धी एक से बढ़कर अध्ययन जिसमें हो वह ग्रंथ उत्तराध्ययन कहलायेगा। द्वितीय अर्थ के अनुसार पश्चात् पढ़ा जाने वाला ग्रंथ उत्तराध्ययन कहलायेगा। इस ग्रंथ में 36 अध्ययन हैं। सूत्रों के वर्गीकरण के अनुसार ही विषयों का निरूपण किया गया है। जिसमें 22 परीषह ब्रह्मचर्य, समिति, कर्मबन्ध, तपश्चरण, सम्यग्दर्शन, मोक्षमार्ग, समाधि, स्वाध्याय आदि सैद्धान्तिक विषयों का सूत्ररूप में विवेचन किया गया है। नीति के निरूपण में विनय, पवित्रता, यज्ञ की अहिंसात्मक धारणा, कर्तव्यकर्म एवं धर्माचरण का समावेश किया गया है। कपिलमुनि, नेमि, हरिकेशी, मृगापुत्र रथनेमि एवं केशी गौतम के आख्यान बहुत ही महत्वपूर्ण है।

② आवस्सय (आवश्यक) - नित्य कर्म के अन्तर्गत सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान ये छः क्रियाएँ बतलायी गयी हैं। इस सूत्र में इन्हीं छह नित्यकर्मों का प्रतिपादन किया गया है। प्रत्येक श्रमण के लिए उक्त छहों क्रियाएँ आवश्यक हैं। इसी कारण इसका नाम आवश्यक है। इस पर निर्युक्ति और भाष्य नामक टीकाएँ भी हैं।

③ दसवेयालिय → (दशवैकालिक) काल को छोड़ त्रिकाल अर्थात् सर्वदा समय में इनका अध्ययन किया जाता है। इसलिए यह ग्रंथ दशवैकालिक कहलाता है इसके रचयिता शय्यंभव हैं। इस ग्रंथ में दस अध्ययन हैं। इन सभी अध्ययनों का विषय मुनि का आचार है। इस पद्यबद्ध रचना में उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार भी आये हैं। उत्तराध्ययन के समान यह भी श्रमण काव्य है। इसके प्रथम अध्ययन में साधक के लिए आवश्यक मधुकरी भोजन-वृत्ति का विवेचन किया गया है। यहाँ द्रुमपुष्प और मधुकर उपमान हैं और प्रासुक आहार और

Scanned with CamScanner

श्रमण उपमेय है। इसमें श्रमण को भ्रामरी वृत्ति द्वारा आजीविका प्राप्त का संकेत किया गया है। इस ग्रंथ का विषयानुक्रम निम्न लिखित है— इसमें श्रमण के लिए अहिंसक मधुकरी वृत्ति का उल्लेख मिलता है तथा इसमें अहिंसा-संयम-तप रूप धर्म का विश्लेषण किया गया है एवं परिग्रह की सीमाओं का विवेचन किया गया है। विनय का विस्तारपूर्वक विवेचन है।

(4) पिंडणिज्जुत्ति (पिण्डनिर्युक्ति)- पिण्ड अर्थात मुनि के ग्रहण करने योग्य आहार। इसमें मुनि के ग्रहण करने योग्य आहार का विवेचन किया गया है। इसमें 671 गाथाएँ हैं और 8 अधिकार हैं। इसमें बताया गया है कि साधुओं के निमित्त अथवा उद्देश्य से तैयार किया गया, खरीद कर अथवा उधार लाया हुआ, किसी वस्तु को हटा दिया गया एवं ऊपर चढ़कर लाया हुआ भोजन निषिद्ध कहा गया है। निर्युक्ति आगमों की सबसे प्राचीन टीकाओं का नाम है, और इसके कर्ता भद्रबाहु माने जाते हैं। प्रस्तुत पिण्डनिर्युक्ति यथार्थतः दशवैकालिक के अन्तर्गत पिण्ड-एषणा नामक पाँचवें अध्ययन की प्राचीन टीका है।